स्फूर्ति अवस्था (Smart Age)
गन्दी अवस्था (Dirty Age)

बाल्यावस्था (CHILDHOOD)

Cole & Bruce

बाल्यावस्था (6–12) या (5–12)
1- जीवन का अनोखा काल — कॉल व ब्रूस (A Unique period Life)
2- निर्माण काल — फ्रायड (किलपैट्रिक)
3- प्रारम्भिक विद्यालय आयु (Elementary School Age)

पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं — आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा

(यूनानी, ग्रीस, ग्रीक) **दर्शनशास्त्र (Philosophy)**

प्रथम अवस्था ⇒ 1- आत्मा का विज्ञान — ब्रह्म, आत्मा, परमात्मा का अध्ययन किया जाता
16वीं शताब्दी
= अरस्तू, प्लेटो, रुडोल्फ गॉइकिल
डेकार्ट समर्थक (मानव को समझना होगा)

मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ ⇒ "Etymalogycal of Psychology" बोलते थे
"गैरिट के अनुसार" / पाम्पोनाजी (इटली)

मन / मस्तिष्क
Indian Philosophy (भारतीय दर्शन)
Western (पाश्चात्य दर्शन) Philosophy

PSYCHOLOGY [शब्द का वर्गीकरण दो मनोवैज्ञानिकों ने किया।]

साइकी (Psyche) → आत्मा (Soul) — अमूर्त है; मन
लॉगस (Logos) ⇒ यूनानी, ग्रीक, ग्रीस → अध्ययन (Study), अध्ययन करना

मनोविज्ञान की प्रथम पुस्तक — "साइकोलॉजिया (1590) — रुडोल्फ गॉइकिल

⇒ मनोविज्ञान का प्राचीन जनक — अरस्तू
⇒ मनोविज्ञान का आधुनिक जनक — विलियम वुण्ट (जर्मनी)
⇒ आत्मा शब्द के समर्थक — अरस्तू ⇒ प्लेटो ⇒ रुडोल्फ गॉइकिल
⇒ डेकार्ट ने कहा था आत्मा के विषय — "खून ही आत्मा है आत्मा ही खून है"

(2) **मन / मस्तिष्क का विज्ञान** ⇒ पाम्पोनाजी (इटली) जॉन लॉक, रीगेरी, थॉमसरीड

जो ज्ञान इन्द्रियाँ द्वारा मस्तिष्क / मन में ले जाती है उस विज्ञान को मन का विज्ञान / मस्तिष्क का विज्ञान।

बाल मनोविज्ञान के जनक — स्टेनली हॉल (1893 आन्दोलन किया था बाल अध्ययन का जनक भी है)

"मनोविज्ञान" (अन्तःकरण) प्राचीन नाम

भूमिका / विषय वस्तु / विषय प्रवेश ⇒ मनोविज्ञान एक स्वतन्त्र विषय है आज पहले मनोविज्ञान का अपना स्वतन्त्र विषय नहीं था मनोविज्ञान की जननी दर्शनशास्त्र से हुए है।

बाल मनोविज्ञान का अर्थ !— मानव विकास के अध्ययन करने वाली शाखा को बाल-मनोविज्ञान कहते है।

अथवा

"जन्म से लेकर किशोरावस्था तक के अध्ययन को बाल-मनोविज्ञान कहते है।

बाल मनोविज्ञान का अर्थ व परिभाषाएं !—

1- **स्टेनले हाल के अनुसार** — "गर्भकाल से लेकर किशोरावस्था तक के बालकों का अध्ययन बाल मनोविज्ञान कहते है।"

बाल-विकास का अर्थ !—

शाब्दिक अर्थ! (Etymological)

बाल विकास शब्द दो शब्दो से मिलकर बना है

बाल + विकास → बाल विकास

बाल का अर्थ !— "बालक का तात्पर्य "गर्भावस्था (Conception) से युवावस्था (Youthood) या परिपक्वावस्था (Maturity) तक की अवस्था के अध्ययन की शाखा / क्षेत्र को बालक विकास कहते है।"

बाल विकास की परिभाषा !—

(1) **कर्क के अनुसार** = "जन्म पूर्व अवस्था (गर्भावस्था) के प्रारम्भ से लेकर किशोरावस्था व परिपक्वता के अंत तक का अध्ययन"

(2) **क्रो & क्रो के अनुसार** ⇒ गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक का अध्ययन।"

"... बालकों का काल है।"

अनुकरण विधि — कैमरा — साडो
(Imitation) — सैडो

(3) जेम्स ड्रेवर के अनुसार — "मानव विकास प्राणी में होने वाला प्रगतिशील परिवर्तन है।"

(4) हरलॉक के अनुसार — "विकास केवल अभिवृद्धि तक सीमित नहीं है अपितु विकास के कारण नवीन विशेषताएं एवं नवीन योग्यताएं प्रकट होती रहती है।"

(5) B.F स्किनर के अनुसार — "विकास की किसी भी अवस्था में बालक को कुछ भी सिखाया जा सकता है।"

(6) J.S ब्रुनर ⇒ "विकास की किसी भी अवस्था में बालक को कुछ भी सिखाया जा सकता है।"

E.B —
(7) हरलॉक महोदय (1974) ! — विकास केवल अभिवृद्धि तक सीमित नहीं है अपितु विकास के कारण नवीन विशेषताएं एवं नवीन योग्यताएं प्रकट होती रहती है।

(8) B.F स्किनर ⇒ विकास प्राणी व वातावरण के मध्य अन्तःक्रिया का परिणाम है।"

(9) किलपैट्रिक के अनुसार — बाल्यावस्था जीवन का निर्माण काल है।

निष्कर्ष ! — बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है। फ्रायड के अनुसार बालक का सर्वांगीण विकास इस अवस्था में भी होता है लेकिन फ्रायड के अनुसार 6 वर्ष तक बच्चे का सम्पूर्ण हो जाता है।" लेकिन बाल्यावस्था में विकास की यह सम्पूर्णतया गति (80%) विकास प्राप्त करता है तथा है। बाल्यावस्था में (70%) विभिन्न आदतें, व्यवहार, रुचि, इच्छाओं के प्रतिरूपों का निर्माण होता है।

बाल-मनोविज्ञान का इतिहास ! —

1 — बाल मनोविज्ञान को सबसे पहले परिभाषित किया — बर्क महोदय (U.S.A अमेरिका के थे।)

2 — बाल मनोविज्ञान के प्रथम प्रतिपादक — पेस्टोलॉजी (इटली) प्रथम बार वैज्ञानिक अध्ययन किया अपने पुत्र 1774 में अपने पुत्र और पुत्र (3½) अलबर्ट था।

(3) पद्धति / विधि का नाम — "बेबी बायोग्राफी"
पुस्तक का नाम ⇒ बेबी बायोग्राफी

(3) बाल-विकास अध्ययन के जनक - "स्टेनली हॉल / स्टेनले हॉल 1900 सदी में U.S.A में एक बाल आन्दोलन किया था। तथा एक प्रश्नावली का निर्माण किया" (1843)

कुप्पुस्वामी (Kuppuswamy) के अनुसार ⇒ "ड्रून के अनुसार

इस अवस्था में बालकों में अनोखे परिवर्तन होते है। उदाहरणार्थ 6 वर्ष की आयु में बालक का स्वभाव बहुत उग्र होता है। वह लगभग सभी बातों का उत्तर न या नहीं में देता है। 7 वर्ष की अवस्था में वह उदासीन होता है और अकेला रहना पसन्द करता है। 8 वर्ष में सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है। 9-12 वर्ष की आयु में विद्यालय से आकर्षण नहीं रह जाता है। वह कोई नियमित कार्य न करके कोई महान और रोमांचकारी कार्य करना चाहता है।

बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएं

Chief Characteristics of Childhood "

बाल्यावस्था को 6-12 वर्ष तक माना जाता है। हरलॉक के अनुसार 6-12 वर्ष की अवस्था बाल्यावस्था होती है। इस की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है।

1- शारीरिक व मानसिक स्थिरता (Physical & Mental Stability) :- 6-7 वर्ष की आयु के बाद बालक में शारीरिक और मानसिक स्थिरता आ जाती है। यह स्थिरता उसको शारीरिक व मानसिक शक्तियों को दृढ़ता प्रदान करती है।

मिथ्या परिपक्वता की अवस्था बाल्यावस्था को कहते हैं। (Pseudo-maturity) "शारीरिक और मानसिक स्थिरता (Rass) - Rass Cp - 144 - बाल्यावस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है।"

2

(2) मानसिक योग्यताओं में वृद्धि। — (Increase in Mental Abilities) बालक की मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है। उसकी संवेदना और प्रत्यक्षीकरण की शक्तियों में वृद्धि होती है। वह चिंतन, विचार को करने लगता है। वह पूर्व अनुभवों को स्मरण रखने की योग्यता रखता है।

(3) जिज्ञासा की प्रबलता ⇒ (Forceful Curiosity) बालक की जिज्ञासा विशेष रूप से प्रबल होती है। वह जिन वस्तुओं के सम्पर्क में आता है उनके बारे में प्रश्न पूछकर हर तरह की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। ये शैशवावस्था के साधारण प्रश्नों से भिन्न होते हैं। उदा० — वह क्या है? इसके विपरीत वह यह पूछता है कि — "यह ऐसा क्यों है?"

(4) वास्तविक जगत से सम्बन्ध ⇒ (Relationship with Real World) — इस में बालक शैशवावस्था से निकल कर बाल्यावस्था में आता है। वह प्रत्येक वस्तु से आकर्षित होता है। उसका ज्ञान, जान लेना चाहता है।

(5) रचनात्मक कार्यों में आनन्द ⇒ (Relationship with Real Word, or Pleasure in Creative Activities)

इस अवस्था में बालक रचनात्मक कार्यों में विशेष आनन्द आता है। वह साधारणतः घर से बाहर किसी प्रकार का कार्य करना चाहता है। उदा० — बगीचे में काम करना, लकड़ी की वस्तुएं बनाना, सीना, पिरोना, कढ़ाई करना आदि।

(6) सामाजिक गुणों का विकास! (Social Qualities) Development of moral Traits" ⇒ बालक, विद्यालय के छात्रों और अपने समूह के सदस्यों के साथ पर्याप्त समय व्यतीत करता है। अतः उसमें सामाजिक गुणों का विकास होता है। जैसे — सहयोग, सद्भावना, सहनशीलता, आज्ञाकारिता! आदि।

(7) नैतिक गुणों का विकास — Development of Moral Traits!" इस अवस्था में प्रारम्भ में ही बालक में नैतिक गुणों का विकास होने लगता है। इसमें अच्छे बुरे का ज्ञान, न्यायपूर्ण व्यवहार, ईमानदारी, सामाजिक मूल्यों की भावना का विकास होने लगता है।

(8) बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास :- (Development of Extrovert Personality) - किशोर में उसका व्यक्तित्व बहिर्मुखी हो जाता है।

(9) संवेगों का दमन व प्रदर्शन ⇒ (Suppression and Expression of Emotions) ⇒ बालक अपने संवेगों पर नियन्त्रण करना सीख लेता है — वह अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण करना सीखता व अपनी माता पिता व बड़ों की बातों को मानता है।

(10) संग्रह करने की प्रवृत्ति (Tendency to Acquisitiveness)

Exa- कॉच (कन्चे) की गोलियाँ, टिकटों को, मशीनों के भाग, पत्थर के टुकड़े आदि को करते हैं।

(11) निरुद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति :- (Tendency of Roaming About without Aims) बालक में निरुद्देश्य की प्रवृत्ति होती है वह इधर-उधर घूमता है।

के ने अध्ययन करके बताया था ⇒ आवारा घूमना, बिना छुट्टी के विद्यालय से भागना, आलस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने को।

(13) काम-प्रवृत्ति की न्यूनता ⇒ (Lesser Sex Tedency) बालक में काम प्रवृत्ति की न्यूनता होती है। वह अपना अधिकांश समय मिलने जुलने, खेलने कूदने, पढ़ने लिखने में व्यतीत करता है। अतः वह कामप्रवृत्ति का प्रदर्शन नहीं कर पाता है।

(14) सामूहिक खेलों में रुचि ⇒ (Intensity of Gregariousness) बालकों में सामूहिक प्रवृत्ति प्रबल होती है समूहों का सदस्य बन जाता है।

रेड्डा (Strang) = रैस्त शायद ही कोई खेल हो जिसे दस वर्ष के बालक न खेलते हों।

(15) रुचियों में परिवर्तन ⇒ इस अवस्था में रुचियों में परिवर्तन होता है।

6-12 वर्ष की आयु की एक अपूर्व विशेषता है मानसिक रुचियों में स्पष्ट परिवर्तन। ?